RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

15.श्री सम्पाद
आर्य संदेश
प्रति

वष: 74, अंक : 27 एक प्रात 2 : रुपये
रविवार 1 अक्तूबर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

POSTED AT R.M.S. MAIL BUSINESS CENTRE 28 SEP 2017 JALANDHAR CITY R.M.S.

वर्ष–74, अंक : 27, 28 सितम्बर–1 अक्तूबर 2017 तदनुसार 16 अश्विन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पुरोहित की घोषणा

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं१ बलम्।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः।।
समहमेषां राष्ट्र स्यामि समोजो वीर्यं१ बलम्।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम्।।

–अथर्व० ३।१९।१,२

शब्दार्थ–मे मेरा **इदम्** = यह **ब्रह्म** = ज्ञान–बल **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण किया हुआ है। **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्** = सम्बल भी **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण है। उनका **संशितम्** = भली प्रकार से तीक्ष्ण किया हुआ **क्षत्रम्** = क्षात्रबल **अजरम्** = जीर्ण न होने वाला **अस्तु** = है, **येषाम्** = जिनका मैं **जिष्णुः** = जयशील **पुरोहितः** = पुरोहित **अस्मि** = हूँ। **अहम्** = मैं **एषाम्** = इनके **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सं+स्यामि** = एक सूत्र में बाँधता हूँ और इनके **ओजः** = ओज, तेज **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्** = रक्षा के सामर्थ्य को **सम्** = एक सूत्र में बाँधता हूँ। **अहम्** = मैं **अनेन** = इस **हविषा** = सामग्री द्वारा **शत्रूणाम्** = शत्रुओं की **बाहून्** = भुजाओं को **वृश्चामि** = काटता हूँ।

व्याख्या–राष्ट्र के पुरोहित = नायक में किन भावों का समावेश हो, यह संक्षेप से इन मन्त्रों में अङ्कित है। पुरोहित में सब प्रकार का बल होना चाहिए–क्या ब्राह्मबल और क्या क्षात्रबल। वैदिक पुरोहित की गम्भीर घोषणा सचमुच सबके मनन करने योग्य है–**'संशितं म इदं ब्रह्म'** = मेरा यह ब्राह्मबल सुतीक्ष्ण है, केवल ब्राह्मबल ही नहीं, प्रत्युत **संशितं वीर्यं बलम्** = वारक सामर्थ्य और रक्षण–शक्ति भी तेज है। दूसरों पर आक्रमण करके उनको भगा देने का नाम वीर्य और दूसरों से आक्रान्त होने पर अपनी रक्षा कर सकने को बल कहते हैं। क्षात्रबल के ये दो प्रधान अङ्ग हैं। पूरी शान्ति वहीं होती है–**'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह'** = [य० २०।२५] = जहाँ ब्राह्मबल और क्षात्रसामर्थ्य समान गति वाले होकर एक–साथ विचरते हैं। क्षत्रिय में केवल क्षात्रबल है, किन्तु ब्राह्मण में ब्राह्मण तथा क्षात्रबल दोनों हैं। यही ब्राह्मण का उत्कर्ष है। क्षात्रबलविहीन ब्राह्म सचमुच हीन है, वह पूर्ण ब्राह्मण नहीं है। जिस राष्ट्र का नेता वेदानुकूल होगा, सचमुच उसका क्षात्रतेज अजर = अक्षीण = अहीन ही रहेगा।

राष्ट्र को सङ्गठित रखना तथा राष्ट्र के ओज–वीर्य आदि की रक्षा करना पुरोहित का काम है–

'समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम'–मैं इनके राष्ट्र को तथा ओज, बल, वीर्य को एक सूत्र में पिरोके रखता हूँ। नेता को चाहिए कि समूचे राष्ट्र के सामने एक महान् उद्देश्य रखे। इससे राष्ट्र में एकता बनी रहती है। इस एकता के रहने से ही पुरोहित कह सकेगा–**'एषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि'** [अथर्व० ३।१८।५]–मैं इनके राष्ट्र को सुवीर बनाकर बढ़ाता हूँ।

जिस प्रकार के शिक्षक होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे। यदि शिक्षक हीनवीर्य, हतोत्साह होंगे तो राष्ट्र में उत्साह–बलादि का अभाव रहेगा। वैदिक पुरोहित तो कहता है–

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्रेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः।।

–अथर्व० ३।१९।४

उनके हथियार कुठार से तीक्ष्णतर और आग से भी अधिक तीक्ष्ण हैं, इन्द्र के वज्र = बिजली से भी तेज हैं, जिनका मैं पुरोहित हूँ। उग्र पुरोहित के शिष्य सभी प्रकार से उग्र होंगे, अतः राष्ट्र की उन्नति चाहने वालों को उग्र पुरोहित उत्पन्न करने चाहिएँ।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत–कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरागमत्।। **–ऋ० १.१२५**

भावार्थ–सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सब जगत् का कर्त्ता, भक्तों को सुख का दाता और हितकर्त्ता है। जिस का श्रवण बिना पूर्व पुण्यों के नहीं मिल सकता, उस प्रभु का ज्ञान और प्राप्ति महात्मा विद्वान् सन्त जनों के सत्संग से ही होती है। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं वे सब, अपने महात्मा गुरुओं की सेवा और उनके सत्संग से भक्त और ज्ञानी व पूजनीय बन गए। सत्संग की महिमा अपार है, लिखी और कही नहीं जा सकती।

दयानन्द और वेद

-ले० डॉ० ब० द० धवन चण्डीगढ़

वेद भाष्य को नया मोड़

(क) कर्मकाण्डीय भाष्य प्रणाली

वेद के विषय में आजकल का सिद्धान्त भी प्राय: इस सिद्धान्त से आरम्भ होता है-जिसके लिये कर्मकाण्डीय वेद भाष्यकार सायण उत्तरदायी हैं-कि वेद एक ऐसी आदिम और जंगली जाति और अत्याधिक बर्बर समाज की सूक्ति संहति (सूक्तियों की राशि व समूह) है, जिसके नैतिक तथा धार्मिक विचार असंस्कृत थे, जिसकी सामाजिक रचना असभ्य थी और अपने चारों ओर के जगत् के विषय में जिसका दृष्टिकोण बिल्कुल बच्चों का सा था। पाश्चात्य वैदिक विद्वानों ने तो सायणाचार्य का अनुकरण किया है। वस्तुत: सायण को आधुनिक पाश्चात्य **वैदिक विचारों का पिता** माना जाता है। इसीलिये वे वेदों के वास्तविक गूढ़ रहस्यों एवं उनकी गम्भीरता को समझने में सर्वथा असफल रहे। पाश्चात्य विद्वान बेशक बड़े परिश्रमी, विचारों में साहसी, अपनी कल्पना की उड़ान में प्रतिभाशाली और अपनी निजी समझ के अनुसार सच्चे थे, तो भी उनकी सबसे बड़ी त्रुटियां निम्नलिखित थीं-

(1) ये प्राचीन रहस्यवादी ऋषियों की प्रणाली को समझने के अयोग्य थे क्योंकि उनकी पुरानी वैदिक खोज अथवा अनुसन्धान रूपी ऋषि आश्रमों के ढांचे के साथ किसी प्रकार की सहानुभूति तथा जानकारी न थी।

(2) वैदिक अलंकार (वाक्य वह विशेष गुण जो सुने में अच्छा लगे और हृदय को पुलकित करे) के रूपकों के अन्दर छिपे हुए विचारों को समझने के लिये बौद्धिक या आत्मिक वातावरण में इनके पास कोई मूल सूत्र नहीं था।

(ख) वैदिक सत्य का ज्ञान

वेद के आधुनिक भाष्यकारों में सबसे प्रथम ध्यान दयानन्द पर जाता है, जिन्होंने यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल के कुल 105 सूक्तों में से लगभग आधे 62वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक विधिवत भाष्य किया है। इन्होंने फिर से वेद का एक सजीव धर्म स्थापित करने का यत्न किया है। स्वामी दयानन्द ने पुरातन भारतीय भाषा विज्ञान के स्वतन्त्र प्रयोग को अपना आधार बनाया जिसे कि उन्होंने निरुक्त में पाया था। निरुक्तकार ने वैदिक शब्दों के अर्थों को यौगिक प्रणाली (धातु के मूल अर्थ को आधार मानकर) किये हैं न कि रूढ़ि (प्रसिद्धि अथवा प्रथा) के आधार पर। स्वयं संस्कृत के एक महान् विद्वान् होते हुए उन्होंने अद्भुत शक्ति और स्वाधीनता के साथ विचार किया है-विशेषकर संस्कृत भाषा के इस विशिष्ट तत्त्व का कि 'धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं।' दयानन्द ने अपनी व्याख्या निम्नलिखित मूल सिद्धान्तों को मुख्य रखकर की-

(अ) वेद धार्मिक, नैतिक और वैज्ञानिक सत्य का एक पूर्ण ईश्वर प्रेरित ज्ञान है;

(ब) वेद की धार्मिक शिक्षा एक देवतावाद की है और वैदिक देवता एक ही देव के भिन्न-भिन्न वर्णनात्मक नाम हैं अर्थात् अनेक देव एक परमदेव में आ जाते हैं;

(स) वे विभिन्न देवता उस परमदेव की उन शक्तियों के भी सूचक हैं जिन्हें कि हम प्रकृति में कार्य करता हुआ देखते हैं।

इस तरह से दयानन्द ने वेद की साधारणतया प्रचलित व्याख्याओं को ललकारा और इन्हें नया मोड़ दिया।

2. वेद विषय में दयानन्द की प्रमुख धारणाएं इस प्रकार हैं :

(1) ऋग्वेद, यजुर्वेद (वाजसनेयि माध्यन्दिन-शुक्ल), सामवेद (राणायनीय), अथर्ववेद (शौनकीय)-ये चार ही मूल वेद सहिताएं हैं। अन्य 1126 शाखायें इनकी व्याख्यानभूत हैं। ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषदें वेद नहीं हैं, अपितु वेदों का व्याख्यान करने वाले हैं। **'मन्त्रब्राह्मणयोर् वेदानामधेयम्'** यह कथन निराधार है अर्थात् चारों वेदों के मन्त्रों के साथ ब्राह्मणग्रन्थों को वेद नहीं माना जा सकता। ईश्वरोक्त अत: एवं स्वत: प्रमाण केवल चार वेद ही हैं, शेष वैदिक साहित्य परत: प्रमाण हैं अर्थात् वेदानुकूल होने पर ही प्रमाण है।

(2) वेद नित्य हैं, प्रलय हो जाने पर भी ईश्वर के ज्ञान में रहते हैं। सृष्टि के आदि में अग्नि, वायु, आदित्य और आंगिरा नामक ऋषियों के हृदयों में क्रमश: ऋग्, यजु:, साम और अथर्व वेदों का परमेश्वर ने प्रकाश किया है। वेद उस ज्ञान का नाम है। वेद की पुस्तकों को वेद इस कारण कहते हैं, क्योंकि उनमें वह ज्ञान लिखा रहता है।

(3) वेदों में मूलोद्देशत: सब विद्यायें हैं। यथा ब्रह्मविद्या, सृष्टि-विद्या, भूगोलविद्या, खगोलविद्या, गणितविद्या, योगविद्या, मुक्तिविद्या आदि।

(4) वेदों में अनेक देवों की पूजा का वर्णन नहीं है, प्रत्युत वेदों में अग्नि, इन्द्र, वरुण, मित्र आदि देवता एक ही परमेश्वर के विभिन्न गुणों को बताने वाले नाम हैं। साथ ही वे शलेषालंकार आदि द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अग्नि, सूर्य, विद्युत, आत्मा, प्राण, राजा, सेनापति आदि अर्थों को भी देते हैं।

(5) वेदों के शब्द यौगिक हैं, किसी एक ही अर्थ में रूढ़ नहीं हैं। इस कारण वे अनेक अर्थों को प्रकट करने में समर्थ हैं। यह आग्रह करना उचित नहीं है कि लोक में किसी शब्द का जो अर्थ है, केवल वही सर्वत्र वेद में भी अभिप्रेत है।

(6) वेदों में किन्हीं ऋषियों, राजाओं, नगरियों, नदियों आदि का इतिहास नहीं है। ऐतिहासिक प्रतीत होने वाले नामों का यौगिक अर्थ है।

(7) वेदों में पशुबलि, नरबलि, मांसभक्षण आदि अमानवोचित कार्यों का समर्थन तथा अश्लील बातें नहीं हैं। जो वेदभाष्य वेद में इनका समर्थन करते हैं, वे भ्रान्त हैं।

(8) वेदार्थ करते हुए पूर्वकृत विनियोगों का अनुसरण करना अनिवार्य नहीं है। उनसे स्वतंत्र होकर भी वेदार्थ किया जा सकता है।

(9) वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। स्त्री, शूद्र आदि को उनसे वंचित रखना न्याय नहीं है।

(10) वेदों में पितृयज्ञ का अभिप्राय जीवित पितरों की पूजा है, मृतों की नहीं।

(11) ऐसे कोई देवता विशेष वेदों को अभिमत नहीं हैं, जो ऊपर कहीं स्वर्ग में रहते हैं तथा जिनके असुरों से युद्ध होते हैं। न ही वेदोक्त आर्य और दस्युओं या दासों के युद्ध से आर्य और द्रविड़ जातियों के मध्य होने वाले कोई ऐतिहासिक संग्राम अभिप्रेत हैं। देव या देवता शब्द समाज में विद्वानों का वाचक है। माता, पिता, अतिथि, आचार्य आदि सभी देव हैं और दिवु धातु के विभिन्न अर्थ जिनमें घटित होते हैं वे ईश्वर, आत्मा, प्राण, इन्द्रिय, सूर्य, चन्द्र आदि भी देव हैं।

(12) वेदों में सविता, सूर्य, विष्णु आदि तथा उषा, अदिति, सरस्वती आदि पुल्लिंगी और स्त्रीलिंगी देवता जैसे किन्हीं प्राकृतिक पदार्थों के वाची हैं, वैसे ही विद्वान् पुरुषों और स्त्रियों के वाची भी हैं। अत: वेदों में प्राकृतिक पदार्थों के ज्ञान के साथ समाजशास्त्र का भी उत्कृष्ट वर्णन है।

3. केवल दो ही वेदार्थ प्रक्रियाएं

अपनी पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा-विषय में स्वामी दयानन्द ने दो बातें स्पष्ट की हैं-

(1) वेदों में पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों की विद्याओं का वर्णन है।

(2) कुछ मन्त्र ऐसे हैं, जिनमें शलेषालंकार आदि से पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार का अर्थ निकलता है।

4. वेद भारतीय संस्कृति का अमृत स्त्रोत

उपर्युक्त पृष्ठ भूमि का क्रियात्मक रूप वेदों में से कुछ मन्त्रों के दृष्टांत देकर दिग्दर्शन कराना युक्ति-युक्त प्रतीत होता है। इससे पवित्रतादायक, स्फूर्ति, शान्ति तथा आनन्द देने वाले उनके प्रभाव का साक्षात् अनुभव पाठक स्वयं कर सकेंगे।

(क) मौलिक प्रश्न :

कस्मै देवाय हविषा विधेम?

हम किस देव की स्तुति और उपासना करें? (ऋग्वेद 1/121/5)

उत्तर-येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा

येन स्व: स्तभितं येन नाक:।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमान:

कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(ऋग्वेद 10/121/5)

(येन द्यौ:) जिसने द्युलोक (उग्रा) तेजस्वी बनाया (च पृथिवी दृढ़ा) और भूमि सख्त बनाई है। (येन स्व:) जिसने स्वर्ग लोक और (येन नाक:) विस्तृत आकाश (अथवा महाव्योम) को अपने-अपने स्वरूप में स्तंभित कर रखा है, (यो अन्तरिक्षे) जिसने अन्तरिक्ष में (रजस:) लोकों का (वि-मान:) निर्माण कर रखा है, उस (कस्मै) आनन्दस्वरूप (देवाय) देव अर्थात् परमात्मा के लिये (हविषा) अर्पण द्वारा पूजा (विधेम) हम सब करते हैं।

(ख) परमात्मा केवल एक ही है

(1) ऋग्वेद के 'पुरुष सूक्त' (10.90.12) में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सभी को 'विराट् पुरुष' के विभिन्न अंग बताया गया है। यहीं से ही एकात्मता की कल्पना स्पष्टतया सिद्ध होती है।

(2) सुपर्णा विप्रा: कवयो क्चोभिर् एकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।

(ऋग्वेद 110.114.5)

एक ही सर्व रक्षक तत्त्व का विद्वान कवि विभिन्न शब्दों द्वारा अनेक रूपों में वर्णन करते हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय

अपने अन्दर के रावण को जलाओ

विजयदशमी का दिन हिन्दुओं का एक पवित्र दिन है क्योंकि इसी शुभ मुहूर्त में मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने विजय यात्रा आरम्भ की थी और कुछ समय में ही लंकापति रावण का वध कर असंख्य प्राणियों को उसके अत्याचारों से मुक्त किया था। राम की यह विजय धर्म की अधर्म पर अपूर्व विजय थी। राम ने रावण का राज्य छीनने के लिए लंका पर चढ़ाई नहीं की थी और न लंका की प्रजा को दास बनाकर उसका दोहन करने के लिए ही अपितु आर्य परम्परा के अनुसार अत्याचार के उन्मूलन और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए थी। उन्होंने अपनी विजय से सच्चे वीर का आदर्श उपस्थित करके क्षत्रिय धर्म की महिमा का भव्य दिग्दर्शन कराया था। मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने लंका पर चढ़ाई करने के लिए अयोध्या या मिथिला से सहायता प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने स्वयं अपने बल पर युद्ध किया था। विजयदशमी का पर्व उस दिन का स्मरण कराता है जब आर्य जाति का जाति सुलभ तेज मौजूद था। जब वह अत्याचार के उन्मूलन और पीड़ितों के रक्षण के लिए शक्तिशाली अत्याचारी के मुकाबले में संगठनात्मक प्रतिभा के बल पर जंगली जातियों को ला खड़ा करना जानती थी। भगवान् राम का हम सत्कार करते हैं क्योंकि उन्होंने आर्य जाति की मर्यादा के अनुरूप नेतृत्व और शौर्य प्रदर्शित किया और विश्वास की भावना को गौरवान्वित किया था।

विजयदशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश में सुसज्जित, सशस्त्र, चतुरंगिणी सेना को खड़ा करके उनकी नीराजना आरती की जाती थी। नीराजना विधि में स्वस्ति और शान्तिवाचन पूर्वक बृहत् होमयज्ञ होता था जिसमें क्षात्रधर्म के वर्णनपरक मन्त्रों से विशेष आहुतियां दी जाती हैं। वैश्यवर्ण या अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने व्यवसाय के वाहन आदि उपकरणों को सुसज्जित और परिमार्जित करके यज्ञ करते थे। राजा लोग विजयदशमी के दिन से अपनी विजय यात्रा का शुभारम्भ करते थे। वैश्य भी अपने वाहनों में बैठकर इसी प्रकार व्यापार यात्रा का प्रारम्भ सूचक अनुष्ठान करते थे। विजयदशमी के दिन से दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा निर्बाध चल पड़ती थी। प्राचीन काल में विजयदशमी का शुद्ध स्वरूप इतना ही प्रतीत होता था। समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन होता चला गया। वर्तमान समय में इस पर्व के अवसर पर राम के अभिनय तथा रामलीला का आयोजन स्थान-स्थान पर किया जाता है। विजयदशमी के इस पर्व को दशहरे के रूप में जाना जाता है। दशहरे का यह पर्व हर वर्ष हमारे जीवन में उमंग और उल्लास लेकर आता है। कई दिन पहले इस पर्व की तैयारियां शुरू हो जाती है। लोग बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ इस दिन का इन्तजार करते हैं। दशहरे से कुछ दिन पहले रामलीलाएं शुरू हो जाती हैं। राम के जीवन का अभिनय किया जाता है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जीवन की झांकियां निकाली जाती हैं। सभी लोग बड़े उत्साह के साथ इस पर्व को मनाते हैं। रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले बनाने की कई दिन पहले तैयारियां शुरू हो जाती हैं। बड़े-बड़े पुतले इन तीनों के तैयार किए जाते हैं। दशहरे के दिन लोग बड़े उत्साह के साथ उस जगह पर इकट्ठे होते हैं जहां पर रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतलों को सजाया होता है। लोग बड़े उत्साह के साथ इन पुतलों को जलता हुआ देखते हैं और अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। परन्तु विचार करने की आवश्यकता है कि बाहर के रावण के स्थान पर अपने अन्दर के रावण को जब तक नहीं जलाया जाएगा समाज में सुख-समृद्धि और सुराज्य की स्थापना नहीं हो सकती। आज समाज में यही हो रहा है। लोग रावण के पुतले को जलाकर सोचते हैं कि हमने रावण का विनाश कर दिया। रावण का विनाश तो कब का हो चुका है। असली रावण तो आज मनुष्य के अन्दर बैठा हुआ है। दिल्ली में अभी कुछ दिन पहले जो 7 वर्ष के बालक प्रद्युम्न की हत्या हुई है और उसकी हत्या के कसूरवार जो लोग हैं वे सब रावण के प्रतिनिधि है। आज समाज में जो तथाकथित धर्म के ठेकेदार राम रहीम जैसे लोग हैं, जो धर्म के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हैं वे भी रावण के वंशज हैं। ऐसे लोग जब तक समाज में हैं, तब तक समाज से रावण को समाप्त नहीं किया जा सकता। इसीलिए आज पुतले जलाने के स्थान पर अपने भीतर के आसुरी भावों को जलाने की आवश्यकता है जिनके कारण समाज में अशान्ति बनी हुई है।

त्रेतायुग के समय में एक रावण पैदा हुआ था और उसका अपराध सिर्फ इतना था कि उसने सीता का अपहरण किया था। परन्तु आज तो घर-घर में रावण बैठा है। माँ, बहन और बेटियां आज अपने घर में भी सुरक्षित नहीं हैं। दिन-दहाड़े भरे बाजार में उनके साथ छेड़छाड़ की जाती है, अपहरण किया जाता है और बलात्कार जैसी घटनाओं को अन्जाम दिया जाता है। छोटी-छोटी बच्चियों के साथ बलात्कार किया जाता है, भ्रूण हत्या के द्वारा उसे जन्म से पहले ही नष्ट किया जाता है। कम दहेज लाने पर उसे प्रताड़ित किया जाता है और उसे आत्महत्या करने को मजबूर किया जाता है। दिन-प्रतिदिन समाचारपत्रों में ऐसी अनेकों दिल को दहला देने वाली घटनाएं पढने को मिलती हैं। राम का नाम लेने वाले, रामलीलाएं करने वाले उनके जीवन का अभिनय तो करते हैं परन्तु उनके आदर्शों को अपने जीवन में नहीं अपनाते।

अगर हम वास्तव में रावण को जलाना चाहते हैं तो सबसे पहले अपने अन्दर छिपे रावण को जलाना होगा। अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी बुराईयों को जलाना होगा। अगर सचमुच रावण को जलाना चाहते हो तो समाज में जो बुराईयां, कुरीतियां, फैल रही हैं, अमानवीय अत्याचार हो रहे हैं, लूटपाट की घटनाएं हो रही हैं, माँ, बहन और बेटियों पर जुल्म हो रहे हैं, इन सबके विरूद्ध लड़ने का संकल्प लो। पुतलों के जलाकर लाखों रूपया बर्बाद करने से अच्छा है कि इन पैसों से किसी गरीब का पेट भरें। पुतले जला देने से बुराईयां समाप्त होने वाली नहीं हैं, अत्याचार मिटने वाले नहीं हैं, भ्रष्टाचार खत्म होने वाला नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो आज तक हमारे देश में कोई बुराई नहीं होती । हजारों वर्षों से हम रावण का प्रतीक मानकर पुतलों को जलाते है। रावण को हम सभी दुष्ट और बुराई का प्रतीक मानते हैं। परन्तु कभी अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयत्न नहीं किया कि कहीं हमारे अन्दर भी तो रावण रूपी अहंकार, क्रोध, लोभ आदि तो विद्यमान नहीं हैं। हमें अपने अन्दर के रावण रूपी दुर्गुणों को नष्ट करना होगा। मेघनाद रूपी भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा, कुम्भकर्ण रूपी आलस्य का नाश करना होगा।

इस वर्ष भी 30 सितम्बर को विजयदशमी का पर्व आ रहा है जिसे हम दशहरे के रूप में मनाते हैं। इस पर्व पर हमें विचार करना है कि हम समाज में फैल रही बुराईयों को दूर करने में कितना योगदान दे रहे हैं। जब तक समाज से बुराईयां दूर नहीं होंगी तब तक कहीं न कहीं उन बुराईयों के रूप में रावण जिन्दा रहेगा और वो रावण का अहं रूपी बीज हमारे भीतर भी हो सकता है। इसीलिए हम चिन्तन करते हुए पहले अपने भीतर के रावण को जलाएं, उसके बाद समाज में जो कोई बुराई दिखाई दे उसे दूर करने में अपना योगदान दें। हम सभी यह संकल्प धारण करें कि आज समाज में रावण के जितने भी प्रतिनिधि छुपे हुए हैं जो अपने आपको सभ्य दिखाने का ढ़ोग करते हैं ऐसे असमाजिक तत्त्वों से राष्ट्र को बचाएं, तभी दशहरे का पर्व मनाना सार्थक हो सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषा वस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।। -ऋ० १.१.७

भावार्थ-हे सबके उपासनीय प्रभो! हम सब 'ओ३म्' नाम जो आपका मुख्य नाम है इससे और गायत्री आदि वेदों के पवित्र मन्त्रों से आपकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना सदा करें। यदि आप सदा न हो सके तो सायंकाल और प्रात: काल में आप जगत् पिता के गुण संकीर्तन रूपी स्तुति, वाञ्छित मोक्षादि वर की याचनारूप प्रार्थना, और आपके ध्यान रूप में अवश्य मन को लगायें जिससे हम सबका कल्याण हो।

वैदिक धर्म के प्राण

सत्य + न्याय + दया + अहिंसा + ईश्वरभक्ति (अन्य मतों से तुलनात्मक सत्य)

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

धर्मों का आदि स्रोत वेद है, वेदों की शिक्षा मानव मात्र के लिए ईश्वर द्वारा प्रदत हैं। ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया, और उसके उपभोग के लिए वेदों का संविधान भी दिया है जो प्राणीमात्र के कल्याण के लिये हैं। और प्राणियों के कल्याण के लिये भिन्न-भिन्न पदार्थों को बनाया है, और उन पदार्थों के गुण कर्म स्वभाव आदि में अनन्त काल तक अर्थात् सर्वकाल में एक समान रहते हैं। उन पदार्थों को हम सृष्टि कर्म विज्ञान कहते है। जैसे सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल, वनस्पति, भूगोल, आदि तथा प्राणियों में भिन्न-भिन्न शरीर और उनकी इन्द्रियां जो जन्म जन्मान्तरों तक एक समान रहती हैं। इस नित्य कर्म विज्ञान को हम सृष्टि क्रम, धर्म कहते हैं, और वहीं वास्तविक धर्म है। इसीलिए मनुष्य मात्र का वैदिक धर्म है।

धर्मो एव हतो हन्ति धर्मो रक्षिति रक्षितः

अर्थात्-जो मनुष्य ईश्वरीय धर्म की उपेक्षा करता है, धर्म उसका ही नाश कर देता है, जो ईश्वरीय धर्म का पालन करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। मानवीय जगत में प्रत्येक पदार्थों को उसके गुण कर्मानुसार मानना, और सम्पूर्ण प्राणियों के साथ उसी के अनुकूल व्यवहार करना, अपने जीवन में, सत्य व्यवहार, और सृष्टि कर्मानुसार प्रत्येक कृत्य मानना व करना, तथा जैसे ईश्वर प्राणी मात्र के लिये उपकार करता है वैसे ही अपने आप भी करना, वास्तविक धर्म कहाता है।

मानव समाज ने अपने स्वार्थ के लिये सम्प्रदायों मतों का निर्माण करके उस मत को धर्म का नाम देकर मनुष्य मात्र को स्वार्थी व सृष्टि क्रम विरूद्ध धर्मो में उलझा दिया है। आज मानव जगत विज्ञान में सर्वाधिक उन्नति कर रहा है। किन्तु मानवीय धार्मिक व्यवहारों के पालन में दिनों-दिन पतन होता जा रहा है। बिना ईश्वरीय धर्म के केवल विज्ञान की उन्नति विनाश का कारण बनता है।

यदि संसार के सारे मत मतान्तर ईश्वरीय धर्म सृष्टि क्रम धर्म को मुक्त कंठ से स्वीकार कर लेंवे तो सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। उपयुक्त धर्म प्राण जो व्यक्त किये है, यदि उसमें एक सिद्धान्त भी निकाल दिया जाए तो वह धर्म नहीं रहता है। उक्त सिद्धान्त ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। आइए इन सिद्धान्तों गुणों पर विचार करते है।

धर्म का प्रथम सिद्धान्त-सत्य

सत्य के अनेक भेद हैं। परन्तु जो पदार्थ जैसा दीखता है उसको वैसा ही मानना, जानना, कहना, सत्य की सामान्य परिभाषा है। क्योंकि भाव का कभी अभाव और अभाव का कभी भाव होता ही नहीं है। त्रिकालातीत को सत्य कहते हैं अर्थात् जो त्रिकाल की चपेट में न आये उसे सत्य कहते है। असत्य से सत्य और सत्य से ऋत सत्य महान है, जिसके बल पर सब कुछ टिका है। ऋत सत्य को समझना अनिवार्य है। क्योंकि असत्य कल्पित, सत्य संकल्पित और ऋत सत्य स्वाभाविक है। असत्य के असुर, सत्य के आश्रित मनुष्य और ऋत सत्य के आश्रित देवता रहते हैं। स्वाभाविक सत्य सदैव सत्य ही रहता है। सत्य को कभी दबाया नहीं जा सकता है सत्य से सुगम कोई मार्ग नहीं है। वह वेद का उपदेश है।

इसलिए वैदिक धर्म ईश्वर को निराकार मानता है। मूर्ति पूजा का निषेध व काल्पनिक देवी देव ओं की पूजा, भूतप्रेत, जादू टोना, फलित ज्योतिष, पशुबलि, मृतक का श्राद्ध, जाति पाति, छुआ-छूत को नहीं मानता इनका वेदों में और ईश्वरीय सृष्टिक्रम में कोई संकेत नहीं है।

मत मतान्तर-अवतारवाद, मूर्तिपूजा, देवी देवताओं की पूजा, फलित ज्योतिष, जाति पांति, ग्रहो का लगना, अनेक काल्पनिक मान्यताओं को मानते है इसलिए यह सभी सत्य से बहुत दूर है।

धर्म का दूसरा सिद्धान्त न्याय

महर्षि दयानन्द जी न्याय की परिभाषा करते हुए कहते है कि जो सदा विचार कर असत्य को छोड़ सत्य का ग्रहण करें, अन्यायकारियों को हटावें, और न्यायकारियो को बढ़ावे, अपने आत्मा के समान सब का सुख चाहे उसे न्यायकारी मानता हूँ।

वैदिक, धर्म को छोड़ कर अन्य मतावलम्बी निष्पक्ष न्याय, अर्थात् जैसे को जैसा कहने में हिचकते है, इसलिए वह भी धर्म का अधूरा पन कहा जायेगा। जबकि कानून सत्य न्याय की दुहाई देता है।

धर्म का तीसरा सिद्धान्त दया

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है कि दया और न्याय का नाम मात्र ही भेद है। क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से छूटकर दुःखो को प्राप्त न हो वही दया कहाती है। यह दण्ड और न्याय व्यवस्था में लागू होता है किन्तु मानवीय सामाजिक, धार्मिक व्यवहारिक जगत में मनुष्य अपने सुकर्म व दुष्कर्म से ही दया का विश्लेषण करता है। प्राणी मात्र पर दया करना, निरीह जीव जन्तु की हत्या न करना, असहाय की सहायता करना, रोगी की सेवा करना, घृणा न करना, आपस में स्नेह से बर्तना, और जैसा मैं अपने लिये चाहता हूँ वैसा ही दूसरो से व्यवहार करना। सदैव सात्विक वृति का पालन करना, दया का लक्षण हो सकता है। सत्य धर्म वही है जहां प्राणी मात्र पर दया की जाती हो।

धर्म का चतुर्थ सिद्धान्त अहिंसा

मन वचन कर्म द्वारा किसी को हानि न पहुचाना, और किसी के प्रति द्रोह का भाव न रखना, ही अहिंसा है। सत्य, असत्य, चोरी न करना ब्रह्मचार्य और अद्रोह अहिंसा के सहायक है। अहिंसा साधना करने में स्वार्थ त्याग की आवश्यकता है जिस मत सम्प्रदाय में हिंसा होती है, वह धर्म का मत नहीं कहा जा सकता है।

धर्म का पंचम सिद्धान्त सत्य ईश्वर भक्ति है।

महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के दूसरे नियम में सत्य ईश्वर की व्याख्या की है।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

मानव जगत में सम्पूर्ण विवाद, द्वेष, पाप, उग्रवाद, अलगाव, अज्ञानता, शोषणवृती, हत्याऐं, लूट-पाट, अन्धविश्वास आदि ईश्वरीय स्वरूप को न जानने, व न मानने के कारण हो रही है। अपने-अपने मतानुसार अपनी मान्यता को ही सत्य मानना, तथा ईश्वरीय व्यवस्था, सृष्टिक्रम विज्ञान की उपेक्षा से ही आज सत्य, धर्म का पतन हो रहा है।

स्पष्ट है वैदिक धर्म के अतिरिक्त प्रत्येक मतों में उक्त किसी न किसी सिद्धान्त की कमी है। विचार कीजिये।

धर्म निरिपेक्ष कानून या विचार, क्या, मानव को शान्ति दे रहे है।

समानो मन्त्रः समिति समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषां जुहोमि

अर्थात् हो विचार समान सबके
चित्त मन सब एक हो।
ज्ञान देता हूं, बराबर भोग्य पा
सब नेक हों।।

महाभारत काल के बाद वैदिक संस्कृति व संस्कारों का युग समाप्त हो गया था और अवसरवादी वेद विहीन चतुर लोगों ने अपने मतों की दुकाने खड़ी कर दी। और विवेक हीन व अदूरदर्शी राजनेताओं ने इन मतो को वोट बैक के लिए हवा देकर धर्म निपेक्ष कानून बना दिया जिसका परिणाम वर्तमान में दीख रहा है फलस्वरूप भारत का बड़े से बड़ा नागरिक भी जड़ चेतन भेद का न समझ कर जड़ को शीश झुकाता है। अन्यों की तो बात है क्या है।

मुझे लगता है कि जड़ पूजा धर्म निरपेक्ष नारा व सामाजिक कुरीतियां इस सृष्टि को समाप्त होने प्रलय तक समाप्त नहीं होने वाले है।

वैदिक धर्म की आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज हो रही है। फिर भी हमें आस नहीं छोड़नी चाहिए और प्रत्येक चिन्तनशील मनीषी को ईश्वर वाणी वैदिक धर्म को सापेक्ष-सार्वभोम-सर्व जानना व मनवाना है सत्य धर्म है।

वेद-विहार

अथर्ववेदाधिकरण

-ले० स्वर्गीय श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

(गंताक से आगे)

न भूमिं वातो अति वाति नाति पश्यति कश्चन।

स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन्।।

-अथर्व० काण्ड ४, सूक्त २, मंत्र २

दूसरे के घर जाकर उसके सम्बन्धियों को सुकार परदारा से व्यभिचार करने के विनियोग में यह प्रयुक्त करना बताया है। वास्तव में इसमें निद्रा-विषयक विज्ञान का वर्णन है।

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे।

एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे।।

-अथर्व० काण्ड ५, सूक्त, २५, मं० 2

[(यथा)] जिस प्रकार (मही-पृथ्वी) विशाल पृथिवी (भूतानां गर्भं आदधे) प्राणियों को अपने गर्भ में धारण करती है, इसी प्रकार मैं पति (ते गर्भमादधे) अपनी पत्नी के शरीर में गर्भ धारण कराता हूँ। (तस्मै अवसे त्वाम् हुवे) गर्भ-रक्षा का तुझे मैं उपदेश करता हूँ।] गर्भाधान की रहस्या-विद्या के स्थान पर प्लाश की लकड़ी को चन्दन के साथ घिसकर योनि पर लेप करने के विनियोग में यह प्रयुक्त करना बताया है गया है।

न घ्रंस्तताप न हिसो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः।

आपश्चिदस्मै घृतमित् क्षरन्ति यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम्।।

-अथर्व० काण्ड ७, सूक्त १८, मंत्र २

[घ्रम्-ग्रीष्म काल का प्रचण्ड सूर्य, न तताप-अधिक न तपाता हो, हिमः न जघान-हिम भी पीड़ित न करे, पृथिवी-पृथिवी, जीरदानुः-जीवनप्रद अन्नदायिनी, प्रनभताम्-बनाई जाय, आपः चित्-जल-धाराएँ भी, अस्मै-इस पृथिवी को, घृतम्-बलप्रद अन्न, क्षरन्ति-उत्पन्न करती है, यत्र-जहाँ, सोम-जलदायक मेघ बरसता है, तत्र-वहाँ, सदम् इति-सदा ही, भद्रम्-कल्याणकारी सुभिक्ष रहता है]।

इस सूक्त को लाल बकरे के मांस खाने के अर्थ में प्रयुक्त बनाया गया है।

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञान-मरणेभिः।

संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम्।।

-अथर्व० ७।५२।१

[अश्विनी-स्त्री-पुरुषों न स्वेभिः हमारा अपने घर वालों के साथ, संज्ञानं-मेल-जोल रहे, अरणेभिः अप्रिय लोगों के साथ भी, संज्ञानम्-हमारा मेल-जोल रहे, इह अस्मासु-समाज में, युवम्-तुम दोनों नवदम्पति भी, संज्ञानम्-मेल जोल से रहो]।

उसके स्थान में तीन वर्ष की बछिया के मांस खाने में इसका विनियोग बताया गया है।

इसी प्रकार अन्य बहुत सारे सूक्त हैं जिनके अर्थ का अनर्थ करके व्यर्थ वेदों को बदनाम किया गया है जिससे अनभिज्ञ मनुष्यों को वेदों में अश्रद्धा होनी स्वाभाविक है।

पशु-बलि

प्रमुञ्चतो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः।

उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पाथः।।

-अथर्व० २।३४।२

मोक्ष-मार्ग का उपदेश करते हुए भगवान् कहते हैं-

[देवाः-विद्वान् पुरुषो, भुवनस्य रेतः-इस विश्व के मूल कारण प्रकृति को, प्रमुञ्चन्तः-परित्याग करके आप लोग, यजमानाय-मुमुक्षु आत्मा के लिए, गातुं धत्त-ज्ञान मार्ग का आश्रय दो, यद्देवानां प्रिय पाथः-जब यह जीव, ज्ञान-योगियों के प्रिय देवयान मार्ग में, अस्थात्-दृढ़ रूप से स्थित करो तब, उपाकृत-योग-द्वारा पवित्र हृदय, शशमानं-देह बंधन को त्यागकर मोक्ष को प्राप्त करने के लिये उद्यत होने की अवस्था को, एतु-प्राप्त हो]।

अब सायणाचार्य का पशु बलिपरक अर्थ भी देखें-

प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतः गातुं धत्त यजमानाय देवाः।।

[देवा-मारे जाने वाले पशु के चक्षु आदि प्राणो ! तुम लोग, भुवनस्य रेतः-पुण्य लोकों में जाने का मार्ग, धत्त-बनाओ]।

उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पाथः।

[शशमानम्-मारे जाते हुए पशु, यत् देवानां प्रियं पाथः-जो देवों का प्रिय खाद्य मांस, अस्थात्-है, उसको वह पशु, अप्येतु-प्राप्त हो]।

यहाँ सायण मरते-तड़पते हुए पशु को यजमान के लिए स्वर्ग का मार्ग बनाने की आशा से मांस को देवों का प्रिय खाद्य बताते हैं। अतः सायण को चार्वाक् बृहस्पति के शब्दों में-

पशुश्चेन्निहतः स्वर्ग ज्योतिष्टोमे गमिष्यति।

स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते।।

[अपने बाप को मारकर स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त क्यों नहीं किया? ज्योतिष्टोम यज्ञ में मारा गया पशु स्वर्ग जा सकता है तो मारा हुआ मनुष्य तो उससे पूर्ण जाना चाहिए]।

अज-पञ्चौदन

प्रजापति के स्वरूप का वर्णन-

अजो ह्यऽग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यज्जनितारमग्रे।

तेन देवा देवामग्र आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः।।

-अथर्व० ४।१४।१

[अजः-उत्पन्न होने वाला आत्मा, अग्ने-ज्ञानस्वरूप परमात्मा के, शोकात्-तेज से, अजनिष्ट-स्वतः मूर्तिमान हुआ, सः अग्रे-वह आत्मा सबसे पूर्व, जनितारम् अपश्यत्-अपने उत्पादक को देखता है, तेन देवाः-उस आत्मा के द्वारा देवयान मार्ग से गमनशील विद्वान्, अग्रे देवताम् आयन्-पहले देव भाव को प्राप्त होते हैं, तेन मेध्यासः-उससे अत्यन्त मेधायुक्त होकर, रोहान् रुरुहुः-उच्च लोकों को प्राप्त होते हैं]।

अजमनज्मि पयसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम्।

तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम्।।

-अथर्व० काण्ड ४, सूक्त १४, मन्त्र ६

इस सूक्त में सायण ने बलि-द्वारा मारे गये बकरे को बड़ा भारी सुपर्ण गरुड़ पक्षी बना दिया जिस पर आरूढ़ होकर यजमान सीधा स्वर्ग में पदार्पण करता है। पके बकरे और भात को हे पाचक-

प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं बेहि पार्श्वम्। ४।१४।७

[तू पूर्व दिशा में बकरे का सिर और दक्षिण दिशा में उसका दाहिना पार्श्व रख]।

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य......

-अथर्व० ४।१४।८

[पश्चिम में बकरे का कटि भाग, उत्तर में ऊपर का भाग, ऊपर पीठ का लाग, नीचे पेट का भाग गाड़ दे]।

शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि त्वचा..... -अथर्व० ४.१४.६

[हे काटने वाले ! पके बकरे को चमड़ी से ढक दे। हे बकरे ! तू (नाकाम्) सुखमय लोक में पहुँचकर चारों पैरों से दिशाओं में प्रतिष्ठित हो]।

सायण एवं ग्रिफिथ आदि विद्वानों की बुद्धि का चमत्कार है कि 'अज' शब्द से विराट् परमेश्वर के बजाय इनको बकरे का मांसपरक अर्थ ही करने को मिला।

स्वयं अथर्ववेद के काण्ड ६, सूक्त ५ में अज का स्वरूप वर्णित है:

अजो वा इदमग्रे व्यक्र मत् तस्योर इयमभवद्द्यौः पृष्ठम्।

अन्तरिक्षं मध्यं विशःपार्श्वे समुद्रौ कुक्षी।।

-अथर्व० काण्ड ६, सूक्त ५, मंत्र २०

[अजः वा-निश्चय से अजन्मा परमात्मा, इदं अग्रे व्यक्रमत्-इस संसार को सर्वप्रथम रचकर उसमें स्वयं व्याप्त हो गया तस्य उरः इयम् सभवत्-उसका वक्षस्थल यह पृथ्वी है, द्यौः पृष्ठम्-द्यौ पीठ है, अन्तरिक्ष मध्यम्-अन्तरिक्ष मध्य भाग है, दिशः पार्श्वे-दिशाएँ पार्श्व भाग है, समुद्रौ कुक्षी-समुद्र और आकाश उसकी दोनों कोखें हैं]।

विष्टारी ओदन

परम प्राजपति की उपासना और फल-

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामर्देव्यमुदरमोदनस्य।

छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधियज्ञः।।

-अथर्व० काण्ड ४, सूक्त ३४, मंत्र १

[यज्ञः-यज्ञमय प्रजापति, विष्टारी-सर्वत्र फैला हुआ, तपसः अधिजातः-तप रूप परमात्मा से उत्पन्न हुआ, अस्य-इस, ओदनस्य-प्रजापति का शीर्षम्-शिरो भाग, ब्रह्म-वेद हैं, अस्य पृष्ठम् बृहत्-इसकी पीठ विशाल ब्रह्माण्ड है, उदरं वामदेव्यम्-उदर भाग जीव-द्वारा अधिष्ठित संसार है।]

सायणाचार्य ने दूसरे मन्त्र में स्त्रियों से भरे स्वर्ग की कल्पना की है।

अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचमपि यन्ति लोकम्।

नैषां शिश्नंप्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम्।।

-अथर्व० ४।३४।२

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि दयानन्द का जीवन प्रेरक व मार्ग दर्शक था

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता

महर्षि दयानन्द के जीवन की अनेक ऐसी प्रेरक घटनाएँ व बातें हैं, जो आज के लोगों के जीवन को सम्भलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी जी का जीवन एक खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था। वे जो कुछ बोलते थे, वही करके दिखा देते थे। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था। बरेली की सभा में गणमान्य लोग जैसे कलेक्टर, कमिश्नर, उच्च अधिकारी सभी उपस्थित थे। उन्होंने बड़ी निर्भीकता से व्याख्यान देते हुए कहा-लोग कहते हैं, सत्य को प्रकट न करो, सत्य कहने से कलेक्टर व कमिश्नर नाराज़ और अप्रसन्न होंगे, गवर्नर पीड़ा देगा। ऋषि ने उच्च स्वर में कहा, चाहे चक्रवर्ती राजा क्यों न नाराज हो, हम तो जैसा है, वैसा ही सत्य कहेंगे। चाहे लोग मेरी अंगुलियों को मोमबत्ती बनाकर जलाएँ, चाहे मुझे तोप के मुख के सामने खड़ा करके उड़ावे, फिर भी मेरी वाणी से सत्य ही निकलेगा। ऋषि ने जीवन भर गलत बातों, ढोंग, पाखण्ड, मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद आदि से समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निराभिमानी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही रहना पसन्द करते थे। आर्यजनों को ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा प्रेरणा व सत्य-पालन का व्रत लेना चाहिए।

ऋषिवर को ''सत्यमेव जयते नानृतम्'' सर्वदा सत्य की जय और असत्य की पराजय होती है, इस पर पूर्ण विश्वास एवं आस्था थी। सत्य के लिए उन्होंने जीवन भर विरोध, अपमान, संघर्ष और जहर पिया। सत्य के लिए अकेले लड़े तथा अकेले ही विजय प्राप्त की। वे महान् योगी, दार्शनिक तपस्वी, त्यागी, सुधारक और भविष्य दृष्टा थे। कभी भी अन्याय, अधर्म एवं असत्य के आगे नहीं झुके। उनकी वाणी में अद्भुत शक्ति और प्रभाव था। वे सत्य के शोधक, वक्ता, पालक, प्रचारक और अन्त में सत्य पर शहीद होने वाले निराले व विलक्षण महापुरुष थे। सचमुच ऋषिवर सत्य के देवदूत बनकर आये थे। वे आजीवन हंस-हंस कर जहर पीते रहे। संसार की दुर्गति, अज्ञानता तथा मानव जाति के पतन पर रातों जागकर आँसू बहाते रहे। उनका सारा जीवन प्रेरणा तथा मार्गदर्शक बना रहा।

अमृतसर में व्याख्यान करते हुए पत्थरों की वर्षा हुई। ऋषि हंसे और बोले-यह फूलों की वर्षा है। अपने विषदाता को यह कहकर मुक्त कर दिया-मैं दुनियाँ को कैद कराने नहीं, कैद से छुड़ाने आया हूँ। दुष्ट यदि अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते, तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़े? महापुरुषों के जीवन की घटनाएँ, व्यवहार, तप, त्याग, बलिदान आदि संसार के मनुष्यों को प्रेरणा, चेतना, गति और जागरूकता देते हैं।

सदियों के बाद महर्षि संसार को जगाने आये थे। ऋषि दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी, निष्काम कर्मयोगी, देशभक्त, निर्भीक वक्ता, संसार को सत्य और शान्ति का सन्देश देने वाला दूसरा महापुरुष इस संसार में मिलना दुर्लभ है। दुर्भाग्य है कि महर्षि का संसार में जो मूल्यांकन, महत्त्व, सम्मान स्थान मिलना चाहिए था, वह मिला नहीं। लोगों ने उस महायोगी को पहचाना नहीं, उसके बताए मार्ग पर संसार चला नहीं। यदि चला होता तो आज देश व दुनियां की यह दुर्गति, दुर्दशा, दुःख, दैन्य, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि न देखने पड़ते। ऋषि के विचार सोच व आदर्श बहुजनहिताय और बहुजनसुखाय की भावना से ओत-प्रोत थे।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः।। **-ऋ० १.१.६**

भावार्थ-हे सब की रक्षा करने वाले, सबके सच्चे प्यारे मित्र परमात्मन्! जो धार्मिक उदार पुरुष, अन्न, वस्त्र, भूमि, स्वर्ण, रजतादि उत्तम पदार्थों के सच्चे पात्र विद्वान् महापुरुषों को प्रेम से दान करते हैं, उन धर्मात्माओं की आप सदा रक्षा करते हैं। ऐसा आपका अटल नियम और स्वभाव ही है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

वेदवाणी

मुझे आश्रय दो

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन् त्वनां आगांसि कृणव-त्सखां ते।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन् भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम्।।
-ऋ० ७।८८।६

ऋषि-**वसिष्ठः**।। देवता-**वरुणः**।। छन्दः-**निचृत्त्रिष्टुप्**।।

विनय-हे जगदीश्वर ! यह जीव तुम्हारा सनातन बन्धु है, यह तुमसे पृथक् नहीं हो सकता। जीव चाहे कितना पतित हो जाए, वास्तव में तो यह स्वरूपतः चेतन आत्मा ही है। इस जीवात्मा में तुम सदा स्वामी (संचालक) होकर व्याप्त हो और तुममें यह जीव-आत्मा सदा आश्रित है। एवं, जीव सदा तुम्हें प्राप्त तुम्हारा 'आपिः' है, सदा तुमसे बँधा हुआ तुम्हारा बन्धु है, तुम्हारा सखा है। यह तुम्हारा साथी तुम्हें इतना प्रिय भी है कि तुमने स्वयं कुछ न भोगते हुए भी इस जीव के भोग के लिए ऐश्वर्यों से भरा यह सब संसार खोलकर रख दिया है, परन्तु फिर भी यह जीव-यह तुम्हारा ऐसा प्यारा सखा जीव-इस संसार में तुम्हारे प्रति अपराध करता रहता है, तुम्हारे नियमों का भङ्ग कर तुम्हें अप्रसन्न करता रहता है।

हे यजनीय देव ! हम जीवों को इस प्रकार तुम्हारे प्रति अपराधी होने पर क्या करना चाहिए ? हमें यह चाहिए कि हम पापी होने पर तुम्हारे दिये गये भोगों को त्याग दिया करें। हे यक्षिन् ! पाप करते ही हमारे द्वारा तुम्हारे यज्ञ का भङ्ग हो जाता है और मनुष्य को बिना यज्ञ किये भोग भोगने का अधिकार नहीं है, अतः पापी होकर हमें भोग-त्याग कर देना चाहिए, किसी भोग के त्याग के रूप में उस पाप का प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए। पापी होने पर भोग कभी न करें-ऐसा करने से हमें तुम एक 'वरूथ' अर्थात् सुरक्षित घर वा आश्रय दे देते हो। हे जगदीश्वर ! तुम सर्वज्ञ हो, मेरे हृदय को जानते हो, मुझ अपने उपासक के सब सच्चे भावों को जानते हो, अतः अब जब कभी मुझसे तुम्हारे किसी नियम का भङ्ग होगा तो मैं किसी भोग के त्यागने के द्वारा तेरी शरण में आने के लिए अपने हाथ फैलाऊँगा। हे विप्र ! हे स्वामिन् ! तब मुझे अपना 'वरूथ' अवश्य प्रदान कीजिएगा, हाथ फैलाये हुए मुझे अपनी गोद में स्थान देकर सुरक्षित कीजिएगा, कुछ समय के लिए अपने घर में मुझे आश्रय दीजिएगा, जिससे पवित्र होकर आगे के लिए मैं वैसा नियम भङ्ग करने से अलग रहूँ।

पृष्ठ 5 का शेष-अथर्ववेदाधिकरण

सायण का अर्थः अनस्था-हड्डी आदि कोषों से रहित शरीर अमृतमय पवित्र लोक को जाते हैं, जातवेदाः-अग्नि, शिश्नं न प्र बहति-उसके प्रजनन भोग-साधन इन्द्रिय को नहीं जलाता क्योंकि वहाँ उसके लिए, बहु स्त्रैणाम्-बहुत सी स्त्रियां उपलब्ध हैं।

हमारा स्वर्ग भी मुसलमानों की हूरों से भरी जन्नत से कम नहीं रहा।

विद्वान् पुरुष-

अनस्था-हड्डी आदि से रहित स्थूल शरीर बन्धन से रहित मुक्त होकर, पवनेन शुद्धाः-परमात्मा की ज्योति से शुद्ध हुए, शुचितः-सब प्रकार से पवित्र होकर, शुचिम् लोकम्-ज्योतिर्मय लोक मोक्ष को, अपियन्ति-प्राप्त होते हैं, जातवेदाः-परमात्मा, शिश्नं-(श्रयते) सुख प्राप्ति के साधनों को, न प्रवहति-दग्ध नहीं करता, स्वर्गे लोके-सुखमय लोक में, एषाम् इन मुक्त आत्माओं को, बहुस्त्रैणाम्-बहुत से भोग-लोक प्राप्त होते हैं।

स स्वराड् भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामाचारी भवति।
-छान्दो० १०।२५

[जीव स्वतन्त्र होकर सब लोकों में इच्छानुसार विचरण सकता है]। अब आप 'विष्टारी ओदन' का यथार्थ अर्थ समझ गये होंगे।

संक्षेप में जो उद्धरण उपस्थित किये गये हैं उनसे स्पष्ट हो जाता है कि अनेक अल्पज्ञ लोगों ने वेदों के कितने गन्दे-गन्दे अर्थ कर डाले हैं। वेद अपौरुषेय ज्ञान है, उसमें अश्लीलता, जादू-टोने, कृत्या, अभिचार आदि को स्थान कहाँ? सायण, कौशिक, पांडरंग आदि भारतीय पंडितों के ही सुर में सुर मिलाते हुए अँग्रेज़ी विद्वान् ग्रिफिथ आदि ने भी कह दिया कि 'त्रयो वेदस्य कर्त्तारः धूर्तभांडनिशाचराः।'

वेदों की संस्कृत से अनभिज्ञ कोई व्यक्ति इन पंडितों के अनुवाद को पढ़कर अन्यथा धारणा कैसे बना सकता है। महीधर आदि का भाष्य तो और भी गन्दा है। वहाँ भी चारों वेदों के अर्थों में इसी प्रकार खींचातानी की गई है।

आर्य समाज बरनाला का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

दिनांक 10.9.2017 दिन-रविवार को साप्ताहिक सत्संग के बाद माननीय प्रधान -डॉ० सूर्यकान्त शोरी की अध्यक्षता में वार्षिक चुनाव के सम्बन्ध में साधारण सभा की बैठक हुई। कोषाध्यक्ष-श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा जी ने गत वर्ष 2016-17 का आय-व्यय-विवरण प्रस्तुत किया; जिसे समस्त उपस्थित सदस्यों द्वारा पारित कर दिया गया। मानयोग प्रधान-डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने गत-वर्ष की गतिविधियों का उल्लेख किया एवं सभी सदस्यों का उनके सहयोग का धन्यवाद किया।

आर्य समाज, बरनाला के वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध सदस्य श्री हरमेल सिंह जोशी की अध्यक्षता एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री-श्री भारत भूषण मैनन के कुशल नेतृत्व में चुनाव की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। गत वर्षों में अर्जित लोकप्रियता एवं कार्य कुशलता को ध्यान में रखते हुए श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा एवं श्री शिव कुमार बत्रा ने डॉ० सूर्यकान्त शोरी को ही प्रधान पद के लिए सर्व सम्मति से नाम प्रस्तुत किया। उपस्थित समस्त सदस्यों ने करतल-ध्वनि से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। इस प्रकार वर्ष 2017-18 के लिए डॉ० सूर्यकान्त शोरी को आठवीं बार सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया। सदन द्वारा-नव निर्वाचित प्रधान-डॉ० सूर्यकान्त शोरी को अपनी कार्यकारिणी गठित करने का भी अधिकार दे दिया गया। मानयोग प्रधान जी द्वारा नव-गठित कार्य कारिणी-श्री हरमेल सिंह जोशी एवं श्री भारत भूषण मैनन-उप-प्रधान, श्री तिलक राम-मंत्री, श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा-कोषाध्यक्ष, श्री राम चन्द्र आर्य-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री वसन्त कुमार शोरी-वेद प्रचार मंत्री इसके अतिरिक्त श्री केवल-जिन्दल, श्री चन्द वर्मा, श्री राजेश गाँधी, श्री शिव कुमार बत्रा, श्री राम कुमार सोवती, श्री सूरज भान गर्ग एवं श्री विजय आर्य जी को अंतरंग सदस्यों में शामिल किया गया। अन्त में नव निर्वाचित-प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने सभी का धन्यवाद करते हुए वेद-प्रचार की गतिविधियों को और आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया। शान्ति-पाठ के साथ सभा-विसर्जित की गई।

तिलक राम मंत्री आर्य समाज, बरनाला

डैन्टल चैकअप कैंप लगाया गया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में स्कूल की प्रबंधकीय कमेटी की अध्यक्षता में डैन्टल चैकअप कैंप का आयोजन किया गया। स्कूल के सभी विद्यार्थियो ने इसका लाभ उठाया। डॉ० रूपिन्द्र सिंह दंत रोग विशेषज्ञ एवं उनकी टीम के द्वारा बच्चों के दांतो का निरीक्षण किया गया। बच्चों को मुफ्त दवाईयाँ बांटी गई। बच्चों को दांतो को नीरोग एवं सुन्दर बनाने के लिए कई टिप्स भी दिए गए। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधकीय कमेटी के सदस्य श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल, श्री विजय सरीन एवं श्री सतपाल नारंग जी विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रिंसीपल मैडम एवं कार्यकारिणी सभा के सदस्यों ने संयुक्त रूप से डॉ० रूपिन्द्र सिंह एवं उनकी टीम को स्वागत किया और उनकी मानवता के प्रति इस विशेष योगदान के लिए सराहना की। प्रिंसीपल मैडम ने बच्चों को बीमारियों से बचने के लिए अपने खान-पान की शैली में सुधार लाने को कहा।

पुरोहित चाहिये

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग फिरोज़पुर शहर को अनुभवी पुरोहित चाहिये। जो कि यज्ञ करवाने के साथ-साथ प्रवचन करने में योग्य हो, तनख्वाह योग्यता अनुसार दी जायेगी। जल्दी सम्पर्क करे।

प्रधान,	**महामन्त्री**
इन्द्रजीत भटिया	**राजीव गुलाटी**
मो. 94173-72538	**मो. 94630-39276**

युगनायक महर्षि दयानन्द सरस्वती

-ले० पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार भजनोपदेशक आर्य सदन-बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)

युगनायक ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं को मानो।
करो वेद प्रचार जगत में भारत के विद्वानों।।

जगत गुरू ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान धुरन्धर, देशभक्त मतवाले।।
बालब्रह्मचारी तपधारी, राज अजब ये त्यागी।
शीलवन्त गुणवान दयामय थे अद्भुत वैरागी।।

जीव मात्र के हित चिंतक को, ठीक तरह तुम जानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।१।।

वेद ज्ञान को भूल गई थी, बिल्कुल दुनिया सारी।
अंधकार में भटक रहे थे, दुनिया के नर-नारी।।
चेतन की पूजा तज दी थी, जड़ पूजा थी जारी।
लाखों गऊऐं रोजाना, जग में जाती थी मारी।।

पढ़ो सभी इतिहास पुराना, गलत ठान मत ठानो।
करो वेद प्रचार जगत में भारत के विद्वानों।।२।।

देव पुरुष ने कृपा की थी, सारे जग पर भारी।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, समझाए नर-नारी।।
दुर्गुण त्यागो सद्गुण धारो बनकर परोपकारी।
छुआछूत की, ऊँच-नीच की, दूर करो बीमारी।।

ऋषि ने गौ को मात बताया, ऋषि की शिक्षा मानो।
करो वेद प्रचार जगत में भारत के विद्वानों।।३।।

भारत था परतंत्र, जुल्म करते थे गोरे भारी।
उनके जुल्मों से आतंकित थी तब जनता सारी।
स्वामी जी ने आजादी का, अनुपम पाठ पढ़ाया।
अंग्रेजों को मार भगाओ, वैदिक मार्ग बताया।।

धीर-वीर निर्भीक गुरू की, महानता पहचानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।४।।

याद रखो ऋषि देव दयानन्द, अगर न जग में आते।
ऋषियों के वंशज दुनिया में, ढूंढे से ना पाते।।
राम-कृष्ण के भक्त आर्यजन दर दर धक्के खाते।
वेद शास्त्र रामायण गीता के पाठक न मिल जाते।।

''नन्दलाल'' ऋषि दयानंद के गुण गाओ मर्दानों।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।५।।

सूचना

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 10 नवम्बर से 12 नवम्बर 2017 तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जायेगा जिसमें मंगल यज्ञ, प्रसिद्ध वैदिक विद्वानों के प्रवचन एवं संगीतज्ञ के मनोहर भजन होंगे। कृपया इन तिथियों को अंकित कर लेवें। विस्तृत कार्यक्रम की सूचना बाद में दी जावेगी। -विजय सरीन

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर द्वारा वेद सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर द्वारा 13 सितम्बर से 20 सितम्बर 2017 तक वेद सप्ताह मनाया गया जिसमें पारिवारिक सत्संगों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सरदारी लाल जी आर्य पारिवारिक सत्संग में आर्य जनता को सम्बोधित करते हुये जबकि चित्र दो में श्री जगत वर्मा जी मधुर भजन सुनाते हुये। इस अवसर पर भारी जनसमूह उपस्थित होता रहा।

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर की तरफ से वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 13 सितम्बर 2017 से दिनांक 20 सितम्बर 2017 तक आर्य परिवारों के सहयोग से बड़े की उत्साहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री, श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने अपने विचार लोगों के सामने रखे तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा संगत को निहाल किया। इस अवसर पर पारिवारिक सत्संगों का श्रृंखला में 13 सितम्बर को आर्य समाज भार्गव नगर के मन्त्री श्री बिशम्बर कुमार के निवास स्थान15 न्यू दशमेश नगर, 14 सितम्बर को श्री रमेश कुमार 1, न्यू दयोल नगर, 15 सितम्बर को श्री साईं दास बी-23 न्यू दशमेश नगर, 16 सितम्बर को पं. मनोहर लाल आर्य मुसाफिर के निवास स्थान भार्गव नगर में, 17 सितम्बर को श्री कृष्ण लाल लक्की टैंट हाऊस, 18 सितम्बर को आर्य समाज मन्दिर भार्गव नगर में, 19 सितम्बर को श्रीमती कान्ता रानी 57-3 भार्गव नगर, 20 सितम्बर को श्री बलवीर कुमार भगत के निवास स्थान 168 करतार नगर में आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज के अधिकारियों प्रधान राजकुमार, वरिष्ठ उपप्रधान सुदेश कुमार, उपप्रधान रमेश लाल, उपप्रधान राज रत्न, महामन्त्री बिशम्बर कुमार, मन्त्री लाभ चन्द, मन्त्री रवी, उपप्रधान, सत्या देवी, उपप्रधान कान्ता देवी, प्रचार मन्त्री पं. शशिकान्त, सोमनाथ, अरूण रत्न, विक्की, ज्योति रत्न, मुकुल, मोहित आदि ने अपना भरपूर सहयोग दिया।

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिक उत्सव 25 सितम्बर से 1 अक्तूबर 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। 25 सितम्बर से 30 सितम्बर 2017 तक प्रातः 6.30 बजे से 8.00 बजे तक भजन एवं हवन यज्ञ होगा जबकि सायं 8.30 बजे से 10.00 बजे तक श्री पंडित विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन एवं श्री अरुण कुमार जी के मधुर भजन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें।

जवाहर महाजन
मंत्री आर्य समाज

महासम्मेलन की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में दिनांक 24 सितम्बर 2017 को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में होने जा रहे आर्य महासम्मेलन की तैयारियों पर विचार विमर्श किया गया और लोगों को अधिक से अधिक संख्या में वहां पधारने के लिये प्रेरित किया गया। इस बैठक में जालन्धर की समस्त आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री एवं सदस्यों ने भाग लिया। आर्य जनता में आर्य महासम्मेलन के प्रति बहुत उत्साह पाया गया।

135वां वार्षिक उत्सव आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास अपना 135वां सम्मेलन बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस ऐतिहासिक भवन में जो राजा जसवन्त सिंह के मंत्री का महल था, इसी भवन में स्वामी जी ने 135 वर्ष पूर्व साढ़े चार माह का प्रवास किया था। यही स्थान उनका अन्तिम कर्म स्थली रहा है। यह भवन व परिसर आर्य जगत को सन् 1972 में राज्य सरकार से मिला था और तभी से यहां से वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार निरन्तर चलता आ रहा है।

अभी पिछले 4-5 वर्षों में इस परिसर में एक विशाल यज्ञशाला, दयानन्द उद्यान, गुरु विरजानन्द उद्यान, अतिथि शाला, वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र का निर्माण आर्य जनता व दानवीरों के सहयोग से पूर्ण किया गया था। अभी हाल ही में एक वृहद महर्षि दयानन्द योग साधना, सत्संग भवन व उस पर 21 कमरों का निर्माण पूर्णता की ओर है। उस भवन का शुभारम्भ इस सम्मेलन में आप की उपस्थिति में किया जायेगा। यह सम्मेलन दिनांक 28, 29, 30 सितम्बर एवं 1, 2 अक्तूबर 2017 को हो रहा है। आप सभी से निवेदन है कि आप इस सुअवसर पर पधारने का कष्ट करें। सम्मेलन के अन्तिम दिन सायं 4.30 बजे कोषाध्यक्ष द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया जायेगा। इसलिये आर्य जनता से अनुरोध है कि वह इस समय पर अधिक से अधिक संख्या में पधारने का कष्ट करें।

आर्य किशन लाल गहलोत
मंत्री
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।